विचार बिन्दु

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। –अज्ञात

भारत में प्रवेश और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल अभ्यर्थी ही क्या प्रतिभावान होते हैं?

हर व्यक्ति जो पृथ्वी पर जन्मता है उसमे प्रतिभा का निखार धीरे-धीरे वृद्धि के साथ होता रहता है। इसमें पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक वातावरण की बड़ी भूमिका होती है। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी अथवा अन्य किसी देश जानें से प्रतिभा का उदय नहीं होता। भारत में भी प्रतिभा उन्नयन की असीम संभावनाएं हैं। परंतू यहाँ भेदभाव वाला राजनीतिक वातावरण और पॉलिसी युवाओं की उस प्रतिभा को कुंठित करने का ही काम करता है न कि उसके उन्नयन का। संसाधन और सुविधाएँ भी राजनैतिक लक्ष्य को ध्यान में रख विकसित होते हैं। जिससे युवाओं में घोर निराशा और कहीं अन्यंत्र जाकर अपना भविष्य बनाने को विदेशों की तरफ रुख करते हैं। ऐसे युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना में ह्रास भी पनपता है। समानता लेने के लिए एक को सभी कुछ सुलभ और अन्य को वही वर्षों तक दुर्लभ सरकारी नीतिओं का परिणाम क्या होगा बताने की जरुरत नहीं? इसी लिए सतत उपेक्षा से बचने के लिए विदेश पलायन किये युवा जब वहां से किन्ही कारणों से निष्काषित किये जाते हैं तो भारत सरकार के पास मुहं छिपाने के लिए भी जगह नहीं होती और सरकार ऐसे अवसरों पर मौन ही रहती है।

इस लेख को पाठक जाग्रत मस्तिष्क और विचारशील विवेक से पढें और वे जो इस लेख के शीर्षक से अविचलित ही रहे हों कृपया वे इसे पढने में समय नष्ट न करें यह लेख उनके किसी काम का नहीं। वे भी इस लेख को पढने में समय नष्ट न करें जो इसे पढने के उपरान्त लेख में वर्णित विषय पर सोचकर भी अपने विचार अथवा टिप्पणी अपने सहयोगिओं से साझा करने में हिचकते हों। ऐसा नहीं है कि वर्णित विषय उनके काम का नहीं अपितु अन्यों से इस पर विमर्श से उनकी सोच उजागर होकर, व्यापक हो सकती है जिससे वे अनपेक्षित प्रश्नो से घिर सकते हैं। तथाकथित शिक्षित और अध्यापन से जुड़े वर्ग से ऐसी प्रवर्ति की आशा नहीं की जा सकती। ख़ैर, प्रत्येक की अपनी विचारधारा में किसी अन्य के हस्तक्षेप की कोई सम्भावना नहीं बनती। देश की जनता के एक पूर्व प्रेजिडेंट डॉ. कलाम साहब सेवानिवृति पश्चात् युवा मस्तिष्क के विचारशील बनाने की मुहीम में संलग्न हुए थे, और उन्होंने दो पुस्तकें यथा 'तेजस्वी मन' और 'अग्नि की उड़ान' प्रकाशित की ताकि युवा भविष्य में भी उसे पढ़कर सही दिशा में विचारशील बनकर जीवन में सफल हो सकें।

इस लेख के केंद्र में घटना है यूक्रेन-रूस युद्ध के दौरान वहां और आसपास के मुल्कों में भारत से पढ़ने गए और फसे भारतीय छात्र जिनकी संख्या बीस हज़ार से भी अधिक थी, उस भीषण गोलीबारी, बारूदी वातावरण और उससे बचने के लिए शरण लिए नारकीय जीवन से सकुशल निकाल भारत लाना, सरकार के लिए एक दुष्कर लेकिन सफल प्रयास था। इस कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए भारत सरकार के चार-पांच केंद्रीय मंत्रिओं को वहां जाकर इस कार्य को अंजाम देना पड़ा।

इस प्रकरण पर मेरी सोच एक दूसरी दिशा में है। पहला पक्ष इस घटना का यह कि आज़ादी के बाद भारत अपने युवाओं के लिए वांछित शिक्षा के संसाधन विकसित करने में असफल क्यों रहा? जिसके कारण एक बड़ा युवा प्रतिशत अन्य अपेक्षाकृत छोटे और विकासशील देशों में जाकर शिक्षा प्राप्त करने को मज़बूर हुआ। हमारी सरकारों ने बहुधा घोषणाओं में सरकार की उपलब्धियां तो खूब बखान की लेकिन वे सब हवा में रहीं धरातल पर कुछ भी नहीं। 140 करोड़ का दम्भ भरने पर संसाधन और सुविधाएँ एक दो करोड़ के लिए भी न बन सकी क्यों ?क्या योजनाओं का क्रियान्वन त्रुटिपूर्ण था, अथवा धनराशि आवश्यकता से कम आल्लोट की या फिर धन की बर्बादी हुई अथवा योजनाएं ही सही दृष्टि से नहीं बनाई गई? जनता पूंछे कि क्या उनके बच्चों को इस देश में वांछित शिक्षा और रोजगार क्यों नहीं मिलते? क्या देश की सरकार इस विषय पर जनता को कभी अवगत कराएगी? अंतत: देश की जनता ही भुक्तभोगी है।

चाँद पर, मंगल पर और सूर्य पर जाने और अनुसन्धान सरकार त्यागे और आर्थिक व् सामाजिक व् अन्य खाईओं को पाटने के प्रबंध पहले करे। देश में ऐसा कोई सेक्टर नहीं जिसके बारे में कहा जा सके कि उसमे सब ठीक है भले ही वह स्वास्थ्य हो, परिवहन हो, ऊर्जा हो, जल और बन प्रवंधन हो, कृषि से सम्बंधित कोई भी उपक्रम हो, न्याय हो, बैंक हो, सामान्य प्रशासन हो आदि सभी में भ्रष्टाचार व्याप्त है।

अब दूसरा पक्ष यह कि उपरोक्त कार्य में संलग्न केन्द्री मंत्री उस निकासी के बाद मौन क्यों हो गए, सदन में अथवा प्रेस कांफ्रेंस कर देश को हालात से अवगत क्यों नहीं कराया? प्रेस ने भी इस मसले को यथोचित कवर नहीं किया फलस्वरूप देश उन निष्कासित छात्रों के भविष्य को जानने से वंचित रह गया, जिनमे से बहुतों की पुरुखों की कृषि भूमि या तो बिक गयी अथवा गिरवी रखी गयी विदेश भेजने के लिए? मुझे मालूम है कि ग्रामीण क्षेत्रों के वासिंदों की आर्थिक हालत ऐसी नहीं कि वे अपनी नियमित आय से अपने बच्चे को पढने के लिए विदेश भेज सकें?

मैनें तो केवल एक यूक्रेन का ही उदाहरण दिया, ग्लोब के अन्य देशों में भी भारतीय युवा पहले उच्च शिक्षा के लिए और फिर रोजगार के लिए दूसरे देशों की तरफ रुख करते हैं। उन्हें यह भलीभांति पता है इस तथाकतिथ अपने देश में उनका कोई भविष्य नहीं। इस विभीषिका को दशकों से चले आ रहे आरक्षण ने भी आग में घी का काम किया है। असंतोष तो बढना तय है आज नहीं तो कल जब देशव्यापी अशांति फैलेगी और तब सरकार बगलें झांकेगी। दशकों से यह देखा जा रहा है कि जब तक जन पीड़ा अशांति को रूप नहीं ले लेती सरकार सक्रीय नहीं होती। समय बदल चुका है अशांति की सुलगती आग कभी भी लपटों का रूप ले सकती है दुश्मन भीतरी और बाहरी उस अवस्था की फ़िराक में हैं कि उन्हें कब अपना मंसूबा पूरा करने को अवसर मिले?

देश के प्रधानमंत्री एक सजग प्रहरी की भांति कार्यरत हैं लेकिन अकेले उनके सजग और सक्रीय रहने से काम चलने वाला नहीं। अन्य मंत्री सरकार में सहयोगी नहीं, साथी मात्र हैं। देश में न तो सबके लिए शिक्षा उपलब्ध है और न ही रोजगार। क्या रूपया बांटने, आरक्षण और पेंशन देने से देश विकसित और खुस हाल हो जायेगा, यदि ऐसा है फिर तो आरक्षण से अभी तक आर्थिक निर्धनता, सामाजिक स्तर पर पिछड़ापन दूर क्यों नहीं हुए? किसने व्यवधान डाले? मेरे विचार से वास्तव में सरकार की ही मंशा नहीं थी कि गरीवों की विपन्नता दूर हो और वे सामाजिक परिपेक्ष में अपने को स्वर्ण के समकक्ष आंक सकें।

चाँद पर, मंगल पर और सूर्य पर जाने और अनुसन्धान सरकार त्यागे और आर्थिक व् सामाजिक व् अन्य खाईओं को पाटने के प्रबंध पहले करे। देश में ऐसा कोई सेक्टर नहीं जिसके बारे में कहा जा सके कि उसमे सब ठीक है भले ही वह स्वास्थ्य हो, परिवहन हो, ऊर्जा हो, जल और बन प्रवंधन हो, कृषि से सम्बंधित कोई भी उपक्रम हो, न्याय हो, बैंक हो, सामान्य प्रशासन हो आदि सभी में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सभी प्रकार के अपराध तो जैसे सरकार पेटेंट समझ उनका कोई संतोषपूर्ण निराकरण नहीं करती।

अभी तो अमेरिका के राष्ट्रपति की ही धमकी मिली है वहां बसे भारतीओं को वापिस लौटने की, ऑस्ट्रेलिया में भी एक बार वहां रह रहे भारतीओं को अपने देश लौटने को कहा गया था। तनिक सोचिये यदि सभी देशों से भारतीओं को खदेड़ दिया गया तो देश के पास उनके पुनर्स्थापन के लिए क्या प्लान है? आबादी में कितना इजाफा होगा और देश उसको कैसे खफा सकेगा? 140 करोड़ का गुरूर सेकंडों में काफूर होते देर नहीं लगेगी। मैं जानता हूँ यह लेख पाठकों को अच्छा नहीं लगेगा लेकिन यथार्थ सदैव कडवा होता है।

अंत में मेरा सुझाव है कि प्रवेश और आगे शिक्षा के लिए सभी प्रति योगी परीक्षाओं को अविलबं बंद कर छात्रों को सभी उच्च पाठ्यक्रमों में योग्यता के आधार पर प्रवेश मिले भले ही संस्थानों की संख्या बढ़ानी पड़ें और उनमे सीटों की संख्या भी प्रवेश पाने वालों के अनुरूप की जायँ। इससे सभी योग्यता धारक अपने वांछित डिग्री प्रोग्राम में प्रवेश पा सकेंगे बिना किसी प्रवेश परीक्षा के। युवा शक्ति का विदेशों में पलायन रुकेगा और विदेशों से निष्क्रमण का प्रश्न ही नहीं होगा। ग्रामीणों की कृषि भूमि बिकने से बच जाएगी और वे आर्थिक तौर पर सुद्रण बने रहेंगे। ऐसा करने से देश के युवाओं में देश हित की भावना सुद्रण होगी और शिक्षा के संसाधन देश में शनै: शनै: सुद्रण हो जायेंगे, फिर किसी अन्य देश की तरफ आकर्षण न्यूनतम होकर समाप्त हो जायेगा।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

पीएलआई योजना नए भारत के सुनहरे नमो इंडिया युग का आधार है

- सोच बदलो दुनिया बदलो –

सुनील दत्त गोयल

भारत आर्थिक मोर्चे पर एक नई ऊँचाई को छूने की ओर अग्रसर है। यह युग 'नमो इंडिया' की पहचान बन चुका है, जहाँ उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआई स्कीम) ने देश को उद्योगों की अप्रत्याशित रफ्तार और जीएसटी संग्रहण की ऐतिहासिक ऊँचाइयाँ दी हैं। एक समय था, जब भारत का औद्योगिक उत्पादन सीमित था, कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विदेशी माँग पर निर्भरता अधिक थी और विकास दर अपेक्षाकृत धीमी थी। लेकिन आज, ने देश की औद्योगिक नीति में क्रांतिकारी बदलाव लाया है।

पीएलआई से पहले- चुनौतियों से भरा भारतीय उद्योग

2020-21 के आसपास, भारत का मोबाइल उद्योग सालाना मात्र 2.13 लाख करोड़ की उत्पादन क्षमता रखता था। ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल, खाद्य प्रसंस्करण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में न निवेश भरपूर था, न तकनीकी नवाचार या रोजगार के पर्याप्त अवसर मिलते थे। फार्मास्यूटिकल्स में व्यापार घाटा 1,930 करोड़ तक पहुँच गया था, यानी देश अपने जरुरत के और एक्टिव फार्मा इंग्रेडिएंट (एपीएलएस) के लिए बाहर निर्भर था। खाद्य प्रसंस्करण में निवेश कछुए की गति से बढ़ रहा था। टेक्सटाइल और व्हाइट गुड्स सेक्टर में भारत अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में अक्सर पिछड़ जाता था।

जीएसटी संग्रहण की स्थिति भी चिंताजनक थी: मोबाइल सेक्टर में हर वर्ष 10,000-15,000 करोड़ से अधिक राजस्व नहीं जुट पाता था। ऐसे में मेक इन इंडिया का सपना अधूरा ही लगता था।

सुनहरा युग: पीएलआई योजना का आगमन

इसी दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने अप्रैल 2020 में प्रॉडक्शन लिंक्ड इन्सेटिव (पीएलआई) स्कीम की शुरुआत की। पुष्ट उद्योग नीति, रणनीतिक चयन और लक्ष्य आधारित इंसेंटिव के बलबूते इस योजना ने शुरुआती चरण में मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा और मेडिकल डिवाइस जैसे क्षेत्रों को कवर किया। बाद में ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, खास स्टील, फूड प्रोसेसिंग, सफेद वस्तुएँ (एसी, एलइडी), सौर मॉड्यूल, टेलीकॉम और बैटरी तक विस्तार हो गया। आज पीएलआई का कुल आउटले 1.97 लाख करोड़ है और 14 क्षेत्रों के लिए 806 कंपनियां चुनी गईं। इनमें एप्पल, सैमसंग, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स, डिक्सन, हिंदुस्तान यूनीलीवर, नेस्ले, जिंदल स्टील, रेमण्ड, ट्राइडेन्ट, आइटीसी, वोल्टास, तेजस, अडानी जैसी भारतीय और वैश्विक कंपनियां शामिल हैं। पीएलआई के तहत निवेश ने सारी सीमाएँ तोड़ दीं-मार्च 2025 तक 1.76 लाख करोड़ के वास्तविक निवेश ने देश के औद्योगिक परिदृश्य को बदल डाला। उत्पादन में जबरदस्त उड़ान आई: पीएलआई लाभार्थियों की कुल बिक्री 16.5 लाख करोड़ पार कर चुकी है। इलेक्ट्रानिक्स के मामले में तो मेक इन इंडिया ने दुनिया को चौंका दिया-2024-25 में मोबाइल उत्पादन 5.25 लाख करोड़ तक पहुँचा और एक्सपोर्ट 775% बढ़कर 2 लाख करोड़ हो गया। फूड प्रोसेसिंग में 8,910 करोड़ का निवेश आया और 171 एप्लीकेशन मंजूर हुए।

ऑटो सेक्टर में भारत आज लाखों इलेक्ट्रिक वाहनों और हाईटेक ऑटो कंपोनेंट्स के वैश्विक निर्माण केंद्र की ओर बढ़ चुका है, जहाँ 103 नए एडवांस्ड ऑटो कंपोनेंट्स और तकनीकी वाहन का निर्माण हो रहा है। इसी तरह टेक्सटाइल में क्लस्टर, मेडिकल डिवाइस पार्क और सौर पीवी मॉड्यूल के स्थानीय उद्योगों को मजबूती मिली है।

नौकरी, नवाचार और स्वावलंबन की मिसाल

पीएलआई ने न सिर्फ निवेश और उत्पादन बढ़ाया, बल्कि रोजगार का भी नया कीर्तिमान स्थापित किया-अब तक 12 लाख प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष नौकरियाँ सृजित हुई हैं। पॉलिसी का फोकस बुनियादी ढाँचे, क्लस्टर डेवेलपमेंट और उच्च तकनीक पर रहा, जिससे गुजरात में डिस्प्ले फैब, सूरत में एमएमएफ क्लस्टर, आंध्र-तमिलनाडु में मेडिकल डिवाइस हब तैयार हुआ। यह पहलू उद्योगों में आधुनिकता लाने, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने और स्वरोजगार के अवसरों को ठाामीण-शहरी भारत तक पहुँचाने वाली नीति बन गई है।

जीएसटी संग्रहण में क्रांतिकारी बदलाव

पीएलआई के तहत उत्पादन और बिक्री में उछाल के साथ ही सबसे बड़ा बदलाव आया है सरकार के खजाने में! मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल सेक्टर में जहाँ पहले कर संग्रहणस सीमित रहता था, अब मोबाइल में 2021-25 के दौरान 2.45 लाख करोड़ की जीएसटी आय हस्तगत की गई। यह आंकड़ा कभी सालाना 10,000-15,000 करोड़ पर सीमित रहता था। सभी 14 क्षेत्रों में सरकार ने अब तक 806 प्रोजेक्ट एप्रुवड किए और एंड-यूज़र तक उत्पाद की गुणवत्ता पहुँचाई। मार्च 2025 तक 21,500 करोड़ से अधिक का इंसेंटिव कंपनियों को दिया जा चुका है।

खिलौना उद्योग: चीन से निर्भरता से आत्मनिर्भरता तक

2018-19 में भारत ने लगभग $304-$371 मिलियन के खिलौने इम्पोर्ट किए, जिसमें से 70% से ज्यादा केवल चीन से आते थे। उस समय भारत की खिलौना एक्सपोर्ट मात्रा सिर्फ $96-$109 मिलियन थी। सरकार ने 2020 में खिलौनों पर कस्टम ड्यूटी बढ़ाकर 70% कर दी और सर्टिफिकेशन अनिवार्य किया, जिससे बिना क्वालिटी वाले चीनी खिलौनों की आमद रुकी। तीन साल में खिलौना इम्पोर्ट 70-74% घटकर $36-$110 मिलियन रह गया, जबकि खिलौना एक्सपोर्ट 239% बढ़कर $326 मिलियन (2,700 करोड़) के आसपास पहुंच गया है।

पहले: $109 मिलियन एक्सपोर्ट, $304-$371 मिलियन इम्पोर्ट।

अब: 326 मिलियन एक्सपोर्ट, $36-$110 मिलियन इम्पोर्ट।

भारत अब नेट एक्सपोर्टर है; पहले $292 मिलियन घाटा था, अब $153 मिलियन सरप्लस।

एक्टिव फार्मा इंग्रेडिएंट (एपीआइ): आत्मनिर्भर भारत की मिसाल

कोरोना काल से पहले भारत एपीआइएस के लिए 90% तक चीन पर निर्भर था। एपीआइ उत्पादों में करीब 50% आयात चीन से होते थे। 2020 में पीएलआइ स्कीम के तहत औषध उद्योग में 6,940 करोड़ की योजना आई। इसके बाद भारत में एपीआइएस निर्माण में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई और 35 प्रमुख एपीआइएस का निर्माण भारत में शुरू हुआ। इंडिया एपीआइ मार्केट अब 13.7% की सीएजीआर से बढ़ रहा है।

पहले: 90% आयात निर्भरता, व्यापार घाटा।

अब: 35 प्रमुख एपीआइएस, घरेलू उत्पादन बढ़ा, निर्यात बढ़ा, आत्मनिर्भरता बढ़ी।

पीपीइ किट: इम्पोर्ट से एक्सपोर्टर देश बनने की कहानी

कोविड से पहले भारत में पीपीइ किट का कोई घरेलू उत्पादन नहीं था; सिर्फ इम्पोर्ट होती थी। जनवरी 2020 में देश में सिर्फ 2.75 लाख पीपीइ किट (सभी इम्पोर्टेड) थी। कोरोना के बाद पीएलआइ व टेक्सटाइल मंत्रालय के सहयोग से मई 2020 में देश में प्रतिदिन 2 लाख से अधिक पीपीइ किट बननी लगी। जून-जुलाई 2020 में भारत ने 23 लाख पीपीइ किट 5 देशों को एक्सपोर्ट की (यूएस, ब्रिटेन, यूएइ, सेनेगल, स्लोवेनिया) और आज लाखों किट प्रतिदिन बन रही हैं।

पहले: 100% इम्पोर्ट, प्रोडक्शन शून्य।

अब: 2 लाख + दैनिक उत्पादन, 23 लाख किट जुलाई 2020 में एक्सपोर्ट, दर्जनों देशों को निर्यात।

कंपनी दर कंपनी, क्षेत्र दर क्षेत्र-सार्थक आंकड़े और उपलब्धियाँ

इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, ऑटो, टेक्सटाइल, फूड प्रोसेसिंग समेत सभी क्षेत्रों में निवेश, उत्पादन और निर्यात के ठोस आंकड़े देखें-कुछ चुनिंदा बिंदु:-

पीएलआइ स्कीम इलेक्ट्रानिक सेक्टर में कुल उत्पादन 5.25 लाख करोड़, निर्यात में 775% बढ़ोतरी

ऑटो सेक्टर में 67,690 करोड़ निवेश, 28,800 से अधिक नौकरियाँ, 103 एडवांस्ड ऑटो कंपोनेंट्स

फूड प्रोसेसिंग में 171 एप्लीकेशन, 8,910 करोड़ निवेश, 1,084 करोड़ इंसेंटिव

टेक्सटाइल में एमएमएफ क्लस्टर और वेल्यू-एडेड एक्सपोर्ट की नई ऊँचाई

एलइडी/व्हाइट गुड्स में लोकल कम्पोनेंट प्रोडक्शन, एसी और एलइडी चिप पैकिंग भारत में शुरू

मोबाइल घाटा समाप्त-फार्मा उत्पादन और निर्यात में भारत नया लीडर

वैश्विक प्रतिस्पर्धा, आत्मनिर्भरता और निवेश का 'नमो युग'

पीएलआइ स्कीम ने विदेशी निवेशकों का भरोसा पाया: भारत में अब मेक इन इंडिया की प्रगति, टाटा-ऐप्पल साझेदारी और डिसप्ले व सेमीकन्डक्टर पर्क्स जैसे प्रोजेक्ट्स ने देश की औद्योगिक छवि बदल दी है। फूड प्रसंस्करण में पीएम-एफएमइ और पीएम किसान संपदा योजना जैसे कार्यक्रमों ने ग्रामीण भारत को उत्पादन, वैल्यू-एडिशन और ब्रांडिंग में अंतरराष्ट्रीय दर्जा दिलाया। टेक्सटाइल, चिकित्सा उपकरण और सौर ऊर्जा क्षेत्र जैसे नए मोर्चे खोलकर भारत ने आत्मनिर्भरता की परिभाषा बदल दी है।

चाणक्य नीति की मिसाल-कर का संतुलन, उत्पादन की छलांग

मोदी सरकार ने कर संग्रहण में चाणक्य नीति को सही मायनों में लागू किया-कर उतना ही लगाया गया जितना मधुमक्खी फूल से शहद ले, बिना फूल को नुकसान पहुँचाए। जैसे भंवरे का काम होता है फल फूलों से रस लेना एवं साथ ही पॉलिनेशन भी करना यानि एक पंथ दो काज। कंपनियों को इंसेंटिव का लाभ तो मिला, साथ ही वाणिज्य और रोजगार में उत्पादन की बाधा हटाकर देश के लिए समग्र राजस्व का रास्ता खोला।

निष्कर्ष :- पीएलआइ भारत के औद्योगिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक युग

पीएलआइ स्कीम सिर्फ एक नीति नहीं, देश के नए युग की पहचान है-यह नीतिगत दृष्टि, पारदर्शिता और स्थायित्व की मिसाल है। उत्पादन, निवेश, नवाचार, रोजगार और कर संग्रहण के आँकड़े अब 'नमो इंडिया' के सुनहरे युग की सच्चाई बयान करते हैं। भारत अब सिर्फ उपभोक्ता राष्ट्र नहीं; विश्व की औद्योगिक ताक़त बनने की राह पर तेज़ गति से है।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

बेहतर काम करने वाले 3440 कांट्रेक्ट टीचर को एक साल और नौकरी का अवसर मिला

इनमें सहायक अध्यापक, लेवल प्रथम व लेवल द्वितीय के शिक्षक शामिल है, इनकी संविदा भर्ती साल 2023 में चयन के आधार पर की गई थी

बीकानेर, (निसं)। राजस्थान के महात्मा गांधी स्कूलों व सरकारी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में काम कर रहे करीब साढ़े तीन हजार सहायक अध्यापकों को अगले साल भी काम करने का अवसर मिलेगा। शिक्षा विभाग ने बुधवार को जारी आदेश में इन सहायक अध्यापकों की नियुक्ति को एक साल के लिए बढ़ा दिया है। अब सेशन 2025-26 में भी इन शिक्षकों के माध्यम से ही पढ़ाई होगी।

- **इस आदेश के बाद स्पष्ट है कि शिक्षा विभाग के अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में अगले साल भी शिक्षकों की अलग से कोई भर्ती नहीं होने वाली है**
- **माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट की ओर से जारी आदेश में सेवाओं में एक साल की बढ़ोतरी दी गई है**

माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट की ओर से जारी आदेश में सेवाओं में एक साल की बढ़ोतरी दी गई है। इनमें सहायक अध्यापक, लेवल प्रथम व लेवल द्वितीय के शिक्षक शामिल है। इनकी संविदा भर्ती साल 2023 में चयन के आधार पर की गई थी। चयनित व आवंटित सहायक अध्यापक वर्तमान में महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कार्यरत है। इन चयनित 3 हजार 440 सहायक अध्यापकों की लिस्ट भी आदेश के साथ जारी की गई है। इस लिस्ट में जिन सहायक अध्यापकों के नाम है, वो ही आगामी सत्र में काम कर सकेंगे। जिनकी सेवाएं संतोषप्रद रही है, उन्हें ही आगे अवसर दिया गया है। इनमें लेवल द्वितीय के अंग्रेजी व गणित विज्ञान के शिक्षक भी शामिल है। इनकी संविदात्मक अवधि में एक वर्ष ही रहेगी, इसके बाद जरूरत होने पर फिर से बढ़ाई जाएगी। फिलहाल नए आदेश में सिर्फ एक साल की अवधि बढ़ी है। इनके एक साल के वेतन की व्यवस्था के लिए वित्त विभाग से बीस नवम्बर को स्वीकृति मिली थी। इस स्वीकृति के आधार पर अब जिला शिक्षा अधिकारी अपने अपने जिले में इनकी सेवा में बढ़ोतरी के अलग से आदेश जारी करेंगे।

इस आदेश के बाद स्पष्ट है कि शिक्षा विभाग के अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में अगले साल भी शिक्षकों की अलग से कोई भर्ती नहीं होने वाली है। संविदा पर ही अंग्रेजी माध्यम शिक्षकों की व्यवस्था की जाएगी। पिछले साल इन स्कूलों में छात्र संख्या कम हो गई थी। स्तरीय शिक्षा नहीं मिलने पर अगले सत्र में संख्या कम होने की आशंका बनी हुई है।

बीती रात प्रदेश में सबसे ठंडा रहा लूणकरनसर

बीकानेर, (निसं)। जिले का लूणकरनसर बीती रात राजस्थान में सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान महज 3.2 डिग्री सेल्सियस रहा। इसके विपरीत बीकानेर शहर में पारा 10.2 डिग्री सेल्सियस रहा। बीकानेर से तीन गुना ज्यादा सर्दी लूणकरनसर में थी। न सिर्फ लूणकरनसर बल्कि अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में कड़ाके की सर्दी शुरू हो चुकी है।

- **बीकानेर शहर में पारा दस डिग्री सेल्सियस तक रहा, न सिर्फ लूणकरनसर बल्कि अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में कड़ाके की सर्दी शुरू**
- **मौसम विभाग का मानना है कि गुरुवार से बीकानेर में शीत लहर की शुरू हो सकती है, जिससे न्यूनतम तापमान में काफी कमी आ सकती है**

मौसम विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक लूणकरनसर राज्य का सबसे ठंडा कस्बा रहा। माना जा रहा है कि श्रीडूंगरगढ़, कोलायत, पूगल, छत्तरगढ़ सहित अन्य क्षेत्रों में भी सर्दी की कमोबेश ऐसी ही स्थिति है। ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान कम रहा रहा है लेकिन अधिकतम पारा दोनों क्षेत्रों में समान रूप से बढ़ रहा है। श्रीडूंगरगढ़ में भी सर्दी बढ़ी है। चूरू में न्यूनतम पारा पांच डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है और श्रीडूंगरगढ़ चूरू से काफी नजदीक है।

दिन व रात के पारे में भी बड़ा अंतर है। दिन का पारा रात की तुलना में तीन गुना के आसपास है। ये ही कारण है कि दिन में लोग स्वेटर नहीं पहन पाते लेकिन रात को गर्म कपड़ों का सहारा लेना पड़ रहा है। तापमान में बड़ा अंतर होने के कारण सर्दी-जुकाम और बुखार के रोगी भी लगातार बढ़ रहे हैं। वैसे मौसम विभाग का मानना है कि गुरुवार से बीकानेर में शीत लहर की शुरू हो सकती है। जिससे न्यूनतम तापमान में काफी कमी आ सकती है। बीकानेर शहर में भी पारा जल्द ही पांच डिग्री के आंकड़े को छू सकता है।

राशिफल

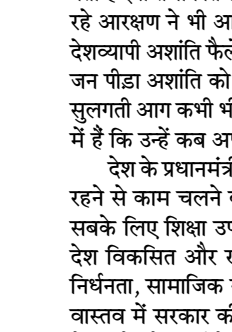

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 4 दिसम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र दिन 2:54 तक, शिव योग दिन 12:34 तक, वणिज करण प्रात: 8:38 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृश्चिक, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 2:54 तक है। रवियोग दिन 2:54 तक रहेगा। भद्रा प्रात: 8:38 से सायं 6:41 तक है। आज श्री दत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुर भैरव और संभवनाथ जयन्ती है। आज पूर्णिमा तिथि का क्षय हुआ है। आज मार्गशीर्ष पूर्णिमा, सत्यपूर्णिमा व्रत, अन्नपूर्णा जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:23 तक, चर 10:59 से 12:17 तक, लाभ-अमृत 12:17 से 2:53 तक, शुभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:05, सूर्यास्त 5:29 तक

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। मन:स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों से संबंधित धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।